



भौगोलिक परिप्रेक्ष्य में महाकवि कालिदास का प्राकृतिक एवं मानवीय दृष्टिपात

➤ डा. अतुल कुमार दुबे¹

सारांश

महाकवि कालिदास प्रकृति देवी के प्रवीण पुरोहित एवं अनन्य उपासक थे जो प्रकृति और मानव का अंजुल भौगोलिक अंतर्संबंधों से स्फुटित होने वाले हृदय को पहचानता है। कवि ने अपने नाटक एवं महाकाव्य जैसी कृतियों में प्रकृति और मानवीय सम्बन्धों का मैत्री, सहज, सहानुभूति, सुन्दर एवं अद्भुत सौम्य रूप का रागात्मक वृत्ति प्रस्तुत किया है, जो भौगोलिक शब्द के प्रमुख केन्द्र बिन्दु-प्रकृति एवं मानव अंतर्संबंध और भी वैज्ञानिक एवं प्रतिभामण्डित करता है। इस प्रकार कवि ने प्रकृति सौन्दर्य का मापदण्ड मानवीय, मानवीय सौन्दर्य का मापदण्ड प्रकृति को मानते हुए प्रतिपग पर्यावरणीय संवर्धन एवं संरक्षण का मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया है।

मुख्य शब्द - प्रकृति, मानव, भौगोलिक, पर्यावरण, आकाश, हिमालय लता

प्रकृति के उपासक महाकवि कालिदास ने आत्मानुभूति एवं सूक्ष्म निरीक्षण के आधार पर अन्तः प्रकृति एवं बाह्य प्रकृति का चित्रण कभी सुकुमार रूप में तो कभी भयावह रूप में प्रस्तुत किया है। कालिदास ने अपने समस्त काव्यों एवं नाटकों में प्रकृति का सुन्दर निरूपण तो किया ही है, किन्तु स्वतन्त्र रूप से प्रकृति के चित्रण के लिए ऋतुसंहार की रचना की। इस रचना में कवि ने बाह्य प्राकृतिक सौन्दर्य के निरूपण की अपेक्षा मानव मन पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन किया है। किर भी ऋतुओं का स्वतन्त्र चित्रण उनके प्राकृतिक प्रेम एवं उत्कण्ठा का द्योतक है। सौन्दर्य के निरूपण की

अपेक्षा मानव के अन्तर्मन पर पड़ने वाले प्रभाव का भी वर्णन किया है? अतः ऋतुओं का स्वतंत्र चित्रण उनके प्रकृति प्रेम का द्योतक है। ऋतुसंहार के प्रथम पद्य में ग्रीष्म ऋतु का बड़ा ही सजीव एवं हृदयस्पर्शी चित्रण किया है।

प्रचण्डसूर्यः स्पृहणीयचन्द्रमाः

सदावगाहक्षतवारिसंचयः ।

दिनान्तरम्योऽभ्युपशान्तमन्मथो

निदाघकालोज्यमुपागतः प्रिये ॥1

प्रिये। ग्रीष्म ऋतु का आगमन हो गया है सूर्य की किरणें प्रचण्ड हो गयी हैं। चन्द्रमा सुहावना लगने लगा

¹ असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग, हर्ष विद्या मंदिर (पी.जी.) कालेज, रायसी हरिद्वार उत्तराखण्ड

है। निरन्तर स्वान के कारण कुंओ-तालाबों का जल प्रायः समाप्त हो चला है। सायंकाल मनोरम लगने लगा है तथा काम का वेग स्वयं शान्त हो गया है। इस प्रकार कवि को कल्पना वर्षा और अन्य ऋतुओं का वर्णन भी सजीवता से परिपूर्ण है।

इस प्रकार भौगोलिक प्रकृति का सुन्दर चित्रण कवि ने अपने मेघदूत कृति करते कृति हुए प्रकृति और मानव में तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित किया है। पूर्वमेघ में मुख्यतः प्रकृति के बाह्य रूप का चित्रण किया है, किन्तु उसमें मानवीय भावनाओं का संस्पर्श भी है। मेघदूत तो वर्षा ऋतु की उपज है। यहाँ वर्षा से प्रभावित होने वाले समस्त जड़-चेतन पदार्थों का निरूपण किया है। मेघ किस-किस मार्ग से आगे निकलता है उस उक्त मार्ग में अपनी छाप छोड़ जाता है।

नीयं दृष्ट्वा हरित कपिशं केसरैरर्द्धरूढेः रविभूत

प्रथममुकुलाः कन्दली बाचनकच्छम्।

जगध्यारण्येश्यधिकसुरभि गन्धमाप्राय चोत्र्याः

सारखास्ते जललवमुचः सूचापश्यति मार्गम्॥2

मेघ को देख लेने पर तो संयोगी जनों का चिन्त कुछ का कुछ हो जाता है फिर वियोगी लोगों का क्या कहना,

मेघगलोके भवन्ति सुखिनौखमन्यथा वृत्ति चेतः।

कुम्भानलेशप्रविनि जने किं पुनदूरसंस्थे॥3

महाकवि कालिदास ने प्रकृति को मानव सुख-दुख में सहभागिनी निरूपित किया है। विरही राम को लताएं अपने पत्ते झुका-झुका कर सीता माता के अपहरण का मार्ग बताती है। मुगियां दर्गाकुर रचना छोड़कर बड़ी-बड़ी आखे दक्षिण दिशा की ओर लगाए एक टक निहारती रहती है।⁴ इस प्रकार कवि की कल्पना ने प्रकृति की सजीवता का विलक्षण एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करते हुए भूगोल के प्राकृतिक एवं जलवायुविक एजेंटों की अदभुत व्याख्या की है। जिसने प्रकृति का

प्रत्यक्ष प्रभाव मानव पर और मानव का सीधा प्रभाव प्रकृति पर पड़ता हुआ हुआ दृष्टिगत किया है।

महाकवि कालिदास प्रकृति को चेतना एवं भावनायुक्त पाते हैं पशु-पक्षी आदि तो चेतनपूर्ण व्यवहार करते हैं, सम्पूर्ण बराचर प्रकृति भी मानव की भांति व्यवहार करती दिखाई देती है। इस प्रकार कवि ने मेघ की दूत बनाकर धूम्र अग्नि, जल, पवन के सम्मिश्रण रूप जड़ पदार्थों को मानव बना दिया है वे प्रकृति में न केवल मानव की बाह्य आकृति को आरोपित करते हैं बल्कि उसमें सुखदुखादि भावों की भी सम्मायना करते हैं। वे प्रकृति को प्रत्यक्ष प्रेमी और प्रेमिका के रूप में महाकवि कालिदास ने प्रकृति के श्रेष्ठ तत्वों को आत्मसात कर उनकी अप्रस्तुत रूप में योजना की है वे अपनी रचनाओं में पात्रों को उपस्थित करने के लिए प्रकृति के सौन्दर्य तत्वों के सदृश्यस्थापित करते हैं। रघुवंश में राजा रघु के मुख-सौन्दर्य के वर्णन के लिए वे प्रकृति के सुन्दरतम एवं प्रसिद्ध उपमान चन्द्र का आश्रय लेते हैं।

प्रसादसुमुखे तस्मिंश्चन्द्रे च विषदप्रभे।

तदा चक्षुश्मतां प्रीतिरासीत्समरसा द्वयोः॥5

शरद ऋतु में रघु के खिले हुए मुख उज्ज्वल चन्द्रमा को देखकर दर्शकों को एक अलग सी अनुभूति होती है। कवियों ने नारी के शरीर की तुलना प्रायः लता से की है, परन्तु महाकवि कालिदास ने अपनी महान कृति कुमारसम्भवम् में मां पार्वती की तुलना चलती-फिरती एवं फूलों से अच्छादित लता के रूप में देखते हैं। जो मानव पर प्रकृति को आरोपित करते हुए भौगोलिक पक्ष को जोड़ता है।

आवर्णिता किंचिदिय स्तनाभ्यां वासो वसाना

तरुणाकरागम्।

पर्याप्तपुष्पस्तबकावनमा सचारिणी

पल्लविनी लतेव॥6

महाकवि कालिदास प्रकृति को मानव जीवन का मार्ग निर्देशक एवं आदर्श की उपदेशिका के रूप में स्वीकार किया है-

मेघ बिना कुछ कहे चातकों को वर्षा जल प्रदान कर उसका उपकार करता है।

निःशब्दोरिप प्रदिशसि जलं याचितश्चातकेभ्यः।

प्रत्युक्त हि प्रणयिषु सतामीप्सितार्थक्रियैव॥7

पपीते के जल गीगने पर मेघ बिना उत्तर दिये उन्हें सीधे जल देता है। सज्जनों का यह स्वभाव होता है कि जब उनसे कुछ मांगा जाय तो ये मुह से कुछ कहे बिना काम पूरा करके ही उत्तर दे देते हैं। यह मानव और पर्यावरण अन्तर्सम्बन्धों के निश्चयवादी विचारधारा को शक्ति प्रदान करता है। रघुवश में महाकवि कालिदास ने बहुत ही सुंदर भौगोलिक चित्रण प्रस्तुत करते हुए जल के स्वभाव का विशद वर्णन प्रस्तुत किया है। जल का सामान्य प्रकृति शीतल है उष्ण (गर्म) वस्तु के सम्पर्क से भले ही कुछ क्षण के लिए जल में उष्णता हो जाय। इस प्रकार महात्मा भी प्रकृति से क्षमाशील होते हैं। अपराध करने पर में कुछ क्षण के लिए उद्विग्न होते हैं।

स चानुनीतः प्रणतेन पश्चान्मया महर्षिर्मुदतागमच्छत्।

उष्णत्वमग्न्यातपसम्प्रयोगाच्चच्छेत्यं हि यत् सा

प्रकृतिर्जलस्य ॥8

इस प्रकार प्रकृति के सहज सौन्दर्य कोमल भावनाओं कल्पनाओं एवं मानवीय अनुराग के नवनवोन्मेष का जो रूप कुमारसम्भव के अष्टम् सर्ग में मिलता है। यह भारतीय साहित्य का शिखर कहा जा सकता है। कवि ने सन्या और रात्रि का वर्णन हिमालय के पावन प्रदेश में शिव के गरिमामय वचनों के द्वारा पार्वती को सम्बोधित करते हुए कराया है और प्रसंग, पात्र देशकाल के अनुरूप प्रकृति का इतना उदात्त और कमनीय वर्णन विश्व साहित्य में दुर्लभ कहा जा सकता है। पश्चिम में डूबते हुए सूर्य की रभियां सरोवर के जल में लम्बी होकर

प्रतिबिम्बित हो रही है तो लगता है कि अपनी सुदीर्घ परछाइयों के द्वारा विवस्वान भगवान ने जल में सोने के सेतुबन्ध रच डाला हो।

इस प्रकार महाकवि ने भौगोलिक कालिदास प्राकृतिक एवं मानवीय पहलू के बीच सामजस्य स्थापित किया है। जिससे भूगोल विषय की महत्ता, संस्कृत शिक्षा के माध्यम से और भी बढ़ जाती है।

पश्च पश्चिमदिगंतलम्बिना निर्मित मितकये विवस्वता।

दीर्घया प्रतिमया सरोग्भया तापनीयमिव॥9

पृथ के शिखर बैठा मयूर उगते सूर्य के घटते चले जाते सोने के जैसे गौरमण्डलयुक्त आलम को बैठा पी रहा है।

एवं एक शिखरे कृतारयदो जातरूपरसगौरमण्डलम्।

हीयमानमहरत्ययातयं पीवरोरु पिबतीय

वर्हिणः॥10

सूर्य के किरणों का जाल समेट लिया है तो हिमालय के निर्झरों पर अंकित इन्द्रधनुष धीरे-धीरे मिटते जा रहे हैं। ऐसे प्राकृतिक वर्गन भूगोल विषय की महत्ता को और बढ़ा देते हैं। इस प्रकार कवि ने अपने कृतियों में जलवायु के मुख्यतस्वों, प्रकृतिक उच्चावचों का जैवमण्डल पर पड़ने वाले प्रभावों पर दृष्टिपात किया है।

शीकरण्यात्तिकर मरीचिमिदूरयत्यवनते चियस्वति।

इन्द्रयापरिवेषशून्यता निर्झरास्तप पितुर्वर्णत्यमी॥11

अर्थात् अस्त होते सूर्य की किरणे बादलों पर पड़ रही है। उनकी नोंके रक्त, पीत और कपिश हो गयी है, जैसे सन्या ने पार्वती को दिखाने के लिए तूलिया उदा कर उन पर रंग बिरंगी छवियां उकेर दी हो। कवि ने प्रकृति में मानवीय राग, करुणा और हृदय की कोमलता के दर्शन कालिदास अपनी विश्वदृष्टि के द्वारा ही कर सके हैं अपेरो रात्रि रमणी का जुड़ा है जिसे चन्द्रमा अपने करों से बिखेर देता है, और फिर उस रमणी के सरोज लोचन वाले मुख को उठा कर चूम लेता है-

अंगुलीभिरिव केशसचयं सन्निगृह्य तिमिरं मरीचिभिः।
कुडमलीकृतसरोजलोचनं चुम्बतीयं रजनीमुखं शशी॥12

महाकवि कालिदास ने अपने विश्व प्रसिद्ध नाटक-अभिज्ञानशाकुन्तलम् में पर्यावरण के प्रत्येक पक्ष व हृदयग्राही वर्णन किया है। कालिदास की यह नाट्य कृति पद-पद पर पर्यावरण संरक्षण व संवर्धन की अनुपम है। जैसा की कहा गया है-

“कामेषु नाटकं रम्यं तन्त्ररम्या शाकुन्तला”

कालिदास ने नाटक के आरम्भ में मंगल चरण रूप में पर्यावरण के प्राकृतिक तत्वों का मार्मिक निरूपण किया है-

या सृष्टिं स्रष्टुराधा वहति विधिच्छुतं या हर्षिया च होत्री।
ये से काल विधवन्तः श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।

यामाह्युः सर्वबीज प्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणयन्तः

प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टा

भिरीषः॥13

महाकवि कालिदास ने अपने नाटक के नान्दी पद्य में भगवान शिव की आठ मूर्तियों का उल्लेख किया है ये आठ मूर्तियां हैं, जल, अग्नि, राजाना, सूर्य, चन्द्रमा, आकाश, पृथिवी एवं वायु। ये सभी मूर्तियां हमारे भौगोलिक जलवायुविक तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हुए प्रकृति एवं मानवीय सम्बन्धों का सुन्दर एवं स्वस्थ वातावरण तैयार करती है और क्षेत्रीय विविधता पर प्रकाश डालती है।

उपर्युक्त पद्य में अष्टरूपधारी शिव की स्तुति के साथ ही प्रकृति के मूल तत्वों का वर्णन किया है। विधाता की आदि रचना जल, अग्नि, यजमान सूर्य चन्द्र भुति विषय गुणा आकाश सर्व बीज प्रकृति पृथ्वी प्राणस्यरूप वायु के रूप में अष्टमूर्ति शिव सम्पूर्ण सृष्टि को धारण करने वाले प्रकृति के सृजन एवं संहारक देवता है जो हमारी पर्यावरणीय आना के प्रतीक है। इस प्रकार इन आठ चेतना-चेतन मूल कारकों भी क्रिया से ऋतुएं समुद्र प्रकाश, पर्वत, नदियां, ऊर्जा आदि भौतिक य रासायनिक

तत्व बने हैं तथा वनस्पतियां जन्तु एवं मनुष्यदि जैविक तत्व भी विकसित हुए हैं। उपरोक्त सभी धातु भौगोलिक विषय को और भी वैज्ञानिक बना देता है।

भौगोलिक पर्यावरण में ये समस्त दशाएं सम्मिलित हैं जो प्राकृतिक मनुष्य को प्रदान करती है। भूमि, जल, पहाड़। और मैदान, सूर्य-चांद, पौधे और जीव-जन्तु, जलवायु गुरुत्वाकर्षण, विद्युत विकिरण, खनिज पदार्थ, समुद्र आदि सभी प्राकृतिक शक्तियां भौगोलिक पर्यावरण का निर्माण करती है। अभिज्ञानशाकुन्तलनाटक के प्रथम अंक में जब राजा दुष्यंत सारथि कर्म्य आश्रम समीपस्थ होने की बात कहते हैं तभी राजा पर्यावरण की दृष्टि से सुभग एवं प्रकृति से आच्छादित लक्षणों से मुक्त वक्तव्य देते हैं।

नौवारा शकुर्गर्ग कोटरमुख भ्रष्टास्तरूणामधः।

प्रस्तिमाः क्वचिदिगुदीफलमिदं सूचयन्त एवोपलाः

विश्वासांपगमादभिन्नगतयः शब्द सहन्ते मृगास्तोयधार

यथाश्च वल्कलाशिखानि शपन्दरेखाडित्ता॥14

अर्थात् यहां आश्रम के सूचक सभी बिन्दु दिखाई दे रहे हैं। पेड़ों के नीचे उन घोंसलों के अग्रभाग से जंगली धन बिखरा पड़ा है। यह धान तोते अपने बच्चे को खिलाने के लिए घोंसलों में ले जाते हैं मुनियों के द्वारा इदगुदी के फलों को तोड़कर तेल निकाला जाता है। आश्रम के मृगों को यह विश्वास हो गया है कि हमें कोई मार नहीं सकता। सरोवर से स्नान करके मुनिजन अपने गीले बालकलों को पहनकर लौटते हैं इस कारण सरोवर मार्ग जल रेखाओं से चिह्नित है। इस श्लोक में प्रकृति पर मानव का अटूट विश्वास परिलक्षित होता है।

अभिज्ञानशाकुन्तल के चतुर्थ अंक में महाकवि कालिदास ने बताया है कि वनदेवता आशीर्वचन देते हुए शकुन्तला को शिवास्ते पन्थानः सन्तु का गौरवमयी उपदेश दे रहे हैं-

रम्यान्तरः कमलिनीहरित

सरोभिष्टायादुमैर्निर्मितकमयूबतापः।

भूताव कुशेषयरजोमृदुरेणुरस्या

शान्तानुकूलपवनष्या॥15

यहां पर चनदेवताओं की आकाशवाणी कमलिनियों से हरे भरे सरोवरों से मार्ग का मध्यभाग मनोहर हो। धनी छाया वाले पृथ्वी से सूर्य की किरणों का ताप का दूर हो इसका मार्ग कमलो के पराग से कोमल पुलि-युक्त शान्त और अनुकूल वायु से युक्त तथा कल्याणकारी हो।

महाकवि कालिदास का प्रकृति के प्रति इतना प्रेम था कि उन्होंने अपने नाटक अभिज्ञान शाकुन्तलम् में नायिका की सुन्दरता को भी प्रकृति से तुलना करते हुए कहा है।-

“सरसिजमनुविद्व श्वेलेनापि रम्यं
मलिनमपि हिमांशोलक्ष्ण लक्ष्मीं तनोति
इयनिधकमनेजा वल्कलेनापि तन्वी।

किमिव हि नधुराणां मण्डनं नाक्तीनाम्॥“16

महाकवि कालिदास के काव्य में प्रकृति के सहज सौन्दर्य, मानवीय राग, कोमल भावनाओं तथा कल्पना के नवनवोन्मेष का जो रूप कुमारसम्भव के अष्टम सर्ग में मिलता है, यह भारतीय साहित्य का शिखर कहा जा सकता है। कवि ने सकया और रात्रि का वर्णन हिमालय के पावन प्रदेश में शिख के गरिमामय वचनों के द्वारा पार्वती को सम्बोधित करते हुए कराया है।

निष्कर्ष

महाकवि कालिदास ने अपनी कृतियों, ऋतुसंहार, मेघदूतम् रघुवंशम्, कुमारसम्भवम् अभिज्ञानशाकुन्तलम् में प्राकृतिक एवं मानवीय चित्रण पर्यावरण संरक्षण एवं रक्षक के रूप में विश्व पटल पर स्थापित किया है। जो भौगोलिक ज्ञान को और भी मौलिक और वैज्ञानिकता की तरफ प्रेषित कर रहा है। इस प्रकार कालिदास ने अपने कृति में भौगोलिक प्राकृतिक चित्रण कही पृष्ठभूमि के रूप में, कही उपमान रूप में तो कही उद्दीयन विभाव के रूप में प्रकट किया है। अपने सभी काव्यों में कालिदास

ने प्रकृति एवं मानवीय अन्तसम्बन्धों के प्रति अपनी अलौकिक एवं हार्दिक प्रीति अभिव्यक्त की है। विक्रमोर्वशीय में मध्याह्न का यह भौगोलिक सुन्दर वर्णन आँखों में जाता है।

उष्णातुः विषिरे निशीदति तरोर्मलालवाले शिखी,
निर्भिद्योपरि कर्णिकारमुकुलान्यालीयते शट्रपदः।

तसंवारी विहाय तीरनलिनी कारण्डवः सेवते,
क्रीडावेशमनि चैष पजरषुकः कलान्तों जलं याचते॥17

सन्दर्भ सूची

1. 1.1 ऋतुसंहार
2. 1.22 मेघदूतम्
3. 1.3 मेघदूतम्
4. रघुवंशम् महाकाव्य 13124.25.
5. 4.18 रघुवंशम्
6. 3.54 कुमारसम्भवम्
7. 2.57 कुमारसम्भवम्
8. 5.54 रघुवंशम्
9. कुमारसम्भवम् 8134.
10. कुमारसम्भवम् 8136.
11. कुमारसम्भवम् 8131.
12. कुमारसम्भवम् 8163.
13. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ० कपिलदेव द्विवेदी 1/2 श्लोक
14. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डा० उमाशंकर त्रिपाठी 1/13 श्लोक
15. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ० उमाशंकर त्रिपाठी 4/11 श्लोक
16. अभिज्ञानशाकुन्तलम्, डॉ० कपिलदेव द्विवेदी 1/20 श्लोक
17. विक्रमोर्वशीयम् 2.22.